ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

भोजपुरी लोकगीतों का सामाजिक सांस्कृतिक वैशिष्ट्य

Social Cultural Characteristics of Bhojpuri Folk Songs

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

अनामिका सिंह
शोध छात्रा,
हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

लोक शब्द अत्यंत प्राचीन है जिसका अर्थ है देखने वाला। इस प्रकार वह सम्पूर्ण जन समुदाय जो इस कार्य को करता है लोक कहलायेगा। साधारण जनता के अर्थ में ऋग्वेद में इसका प्रयोग अनेक स्थानों पर किया गया है। ऋग्वेद के सुप्रसिद्ध पुरूष सूक्त में 'लोक' शब्द का व्यवहार जीव तथा स्थान दोनों अर्थों में किया गया है। यथा–

नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत
पद्भ्यां भूमिर्दिदशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयत्।

डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि ''लोक शब्द अर्थ जन–पद या'' या 'ग्राम्य' नहीं है बल्कि नगरों और गाँवो में फैली हुइ वह समूची जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है। ये लोग नगर में परिष्कृत, रूचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रूचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए भी जो भी वस्तुएँ आवश्यक होती हैं उनको उत्पन्न करते है।'' सामान्य जनता जो कुछ सोचती है, अनुभूति करती है उसी का प्रकाशन लोकगीतों में होता है। ग्रामीण जनता हर अवसर पर गीतों के माध्यम से अपना मनोरंजन करती है।

The word folk is very ancient which means observer. In this way, the entire people community that does this work will be called Lok. It has been used in many places in the Rigveda in the sense of ordinary people. In the Rigveda's well-known male sukta, the word 'Lok' has been treated both in terms of life and space. As-

Nabya Aasidantrikshan Shishne
Padbhyana Bhumiardisha: Srotruttha and Lokam Akalayat.

Dr. Hazari Prasad Dwivedi, while expressing his views on folk, wrote that "Lok word does not mean 'Jan-Pad or' or 'Rustic' but it is the entire public spread in cities and villages whose basis of practical knowledge. There are no books. These people are more accustomed to a simple and unpretentious life than those considered sophisticated, rich and cultured in the city and produce whatever is necessary to keep the entire luxury and delicacy of people of sophisticated interest. Is. "What the general public thinks, realizes that it is published in folklore. The rural masses entertain themselves through songs on every occasion.

मुख्य शब्द : भोजपुरी लोकगीत, भारतीय संस्कृति, रीति रिवाज, संबंध, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, राजनैतिक जीवन, सांस्कृतिक जीवन।
Bhojpuri Folklore, Indian Culture, Customs, Relationships, Social Life, Economic Life, Political Life, Cultural Life.

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का सटीक चित्रण हमें इन लोकगीतों में मिलता है। लोकगीतों में हमें अशिक्षित और असंस्कृत भोजपुरी समाज का ज्यों का त्यों रूप देखने को मिलता है। इसके साथ ही भारतीय संस्कृति के अनुकरणीय आदर्शात्मक उल्लेख भी हैं। पुत्र जन्म के सयम का उत्साह तथा पुत्री के जन्म के समय होने वाला दुख भी अभिव्यक्त हुआ है। भोजपुरी समाज में स्त्रियों की दुर्दशा तथा समाज में व्याप्त कुरीतियाँ, बाल–विवाह, वृद्धविवाह, बहु–विवाह, का मर्मस्पर्शी वर्णन इन गीतों में मिलता है। सास–बहु, ननद और भावज के शाश्वतिक कलह की चर्चा भी दिखाई पड़ती है। इसके साथ ही भोजपुरी समाज के उज्जवल पक्ष का भी चित्रण कुछ कम नहीं है। भाई और बहन का सहज, स्वाभाविक प्रेम जो आज कहीं–कहीं देखने को मिलता है। इन गीतों में पाया जाता है। माता और पुत्री के अलौकिक प्रेम की द्विव्य झाँकी इनमें हमें देखने को

मिलती है। स्त्रियों के सतीत्व का दिव्य एवं स्वर्गीय दृश्य हम इन गीतों में पाते हैं। समाज संबंधों को एक ताना–बाना है। इसमें व्यक्ति एक दूसरे के साथ व्यावहारिक संबंधों में बंधे रहते हैं। समाज के नियमों का पालन करना जनता के लिए आवश्यक रहता है। जो ऐसा नहीं करता उससे सभी संबंधो तोड़ लिए जाते हैं। पहले के समाज में प्रत्येक आदमी का मूल्य था। सभी को नेवता दिया जाता था। यहाँ ताकि गंगामाई, कालीमाई, सभी देवता, सॉप–बिच्छू तक को नेवता दिया जाता था।

ए स्थानहिं बइठेली कालीय मइया, उनहूँ के नेवत देउ आजु।
ए उनके सरीखवां बहुआरो देइ, उनहूँ के नेवत देउ आज।
ए सरगहिं बइठेले कवन बाबा, उनहूँ के नेवत देउ आज।
ए उनके सरीखवा, बहुआरो देइ, उनहूँ के नेवत देउ आज।
ए उनके सरीरवा पितर लोग, उनहूँ के नेवत देउ आज।
ए साँपवा, गोंजरवा, बिछिया त चिउँटवा चिऊँटिया, माटवा, ए उनहूँ, के नेवत देउ आजु।
ए अन्हिया, पनिया, बरखवा तओही छक बादीर उनहूँ के नेवत देउ आजु।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य भोजपुरी लोकगीतों की सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टता का अन्वेषण और विश्लेषण करना है। लोकगीतों की परम्परा प्रत्येक समय समाज का अभिन्न अंग है। भरतीय समाज में ये लोकगीत जीवन के प्रत्येक अंग को स्वयं में समाहित किये हुए हैं। भारत में भाषायी वैविध्य के साथ साथ सांस्कृतिक वैविध्य की भी प्रचुरता है। किसी बोली या भाषा विशेष के लोकगीतों में उसे बोले जाने वाले क्षेत्र विशेष की संस्कृति की स्पष्ट झलक मिलती है। बिहार प्रांत के भोजपुर क्षेत्र की बोली भोजपुरी ने आज बिहार से लेकर उ.प्र. तक के कई क्षेत्रों में व्यापक विस्तार किया है। अतः भोजपुरी के लोकगीतों के विषय और सांस्कृतिक विस्तार के अवलोकन के उद्देश्य को भी इस शोध पत्र में उल्लिखित किया गया है।

विषय विस्तार

भारतीय वर्ण व्यवस्था

भोजपुरी लोकगीतों में चारों वर्णो का भी उल्लेख मिलता है। जिसमें ब्राह्मणों का उच्च स्थान है, क्षत्रिय जमींदार है। वैश्य खेती करता है तथा शूद्र सब की सेवा करता है। वर्णों में भी कई वर्ग हो गये हैं, जिनका काम अलग–अलग है और उसी के अनुसार जातियाँ हो गई। तेली तेल देता है, तमोली पान देता है। इसके अलावां माली, बढ़ई, गोंड़ धोबी, लोहार, सोनार सभी के कार्य के अनुसार जातियाँ बटी हुई है –

1. तेलिनि ले आवे तेल, तमोलिनि पनवा।
   मालिनि ले आवे हार, कन्हइया पहिरावहीं।
   नन्द बढ़इया जी से कहीह पलंग एक चाहहीं।
   झूलत रांधाकृष्ण त आप सुलाव हीं।
2. नोह काटु नउवा, नोह काटु रे।
3. भरसाई घरे दबिला माजा करी हो माजा करी।
   गोड़वा पूछे गोंड़िनिया से हो, दबिला के कारबार कइसे चली।
4. कहला पर धोबिया, गदहा परना चढ़े।

पारिवारिक इकाई

सामाजिक संगठन में परिवार का स्थान मुख्य होता है। व्यक्ति से परिवार बनता है, फिर समाज। लोकगीतों में संयुक्त परिवार का ही उल्लेख मिलता है जहाँ पिता या दादा ही मालिक होते हैं उन्हीं का शासन परिवार पर होता है –

केई जइहें पुरब देसे, केई जइहें पछिम देसे।
केइ जइहें बेतवा के नोकरिया ए बिरना।
ससुर जइहें पुरब देसे, भसुर जइहें पछिम देसे।
सइयाँ जइहें बेतवा के नोकरिया ए बिरना।

x x x

हाथी साजो घोड़ा साजो, साजो एक कवन बाबा हो
आरे बाबा राम के जात बराति हो।

परिवार के सदस्य पारिवारिक मर्यादा का पालन करते हैं। उनका विश्वास है कि बड़ों को सम्मान देने में ही अपनी भलाई है। किसी भी धार्मिक कृत्य, अवसर आदि पर परिवार के बड़ों के पाँव छू कर आशीर्वाद लिया जाता है –

पूजेले बाबजी के पाँव, सुदिनवा केरा जनमल,
पूजेले आजी के पाँव, सुदिनवा केरा जनमल।

x x x

उजर–उजर पतवा, ओपर बइठे नागवा।

x x x

नागवा सलाम करे, बाबूजी के अगवा।

परिवार ही मनुष्य की प्रथम पाठशाला है। यहीं से शिक्षा और संस्कार प्रारम्भ होते है। वैदिक ग्रंथो में सोलह संस्कारों का वर्णन मिलता है। भोजपुरी लोकगीतों में इन संस्कारों का वर्णन मिलता है। संतान होने से माँ का हदय संतृप्त हो जाता है। परिवार में खुशी छा जाती है। विभिन्न क्रियाओं के साथ इस समय सोहर गाने की परम्परा है।

आँगना में कुइयाँ खोनाओं आरे पियरी माटी नु हो।
आरे माइ जगावहुँ बाबा हो कवन बाबा, जनमेले नाती।

भारतीय संस्कृति में निहित चार पुरुषार्थ

चार पुरूषार्थ में से एक अर्थ भी है। जिसका प्रारम्भ भोजन से होता है। भोजपुरी लोकगीतों में बार–बार 'सोने की थाली में जेवना परोसलो' सोने के सुराही गंगा जल पानी, पाँच–पाँच पनवा के बीड़ा लगवलो तथा फूलहजारी के सेज इसवलों का उल्लेख मिलता है। जन्म से लेकर अंतिम संस्कार तक खूब खर्च करने का वर्णन मिलता है अर्थात् हमारी संस्कृति में अर्थ का, भौतिक सुखों का भी बहुत महत्व है।

भोजपुरी क्षेत्र बाढ़ ग्रस्त और सूखे से भी ग्रस्त होता है। अतः खेती से भरण–पोषण संभव नहीं हो पाता इसी कारण लोगों को नौकरी करने बाहर जाना पड़ता है।

गवना बाहर जाना पड़ता है।
अपने गइले परदेस रे विदेसिया।

प्रायः परिवारों में झगड़े होते रहते थे जिसका मुख्य कारण धन की कमी होता था। सभी भाइयों में जो कुछ कमाता नहीं था उसे घर से अलग कर दिया जाता था। नौकरी न मिलने से किस तरह कष्ट होता है। रूखा–सूखा खाकर अपना पेट भरता है–

जेवना ना जेब पददेसी के राजा, चलन भइले ना।
दमरी के चाना बरिस दिन खाना, महँग भइले ना।
भोरे हरि के नोकरिया महँग भइले ना।

गरीबी और शोषण का सामाजिक बोध

लोकगीतों में जनता की गरीबी शोषण का सम्पूर्ण चित्रण हमें मिल जाता है। शोषक और शोषित वर्ग का वास्तविक रूप हमें दिख जाता है। बेचारे मजदूर किसान गरीबी में पैदा होते हैं। दिन–रात परिश्रम करने के बाद भी उन्हें ढ़ग का भोजन नसीब नहीं होता। वे कभी लपसी खाते हैं कभी ऐसे ही सो जाते हैं। खेती के लिए कर्ज चुकाते हैं और कर्ज भरते–भरते इस संसार से ही चले जाते है–

फिकिरिया मरलसि जान, दुरदिनवा कइलस हरान।
करजा काढ़ि के खेती कइली, मारि गइल सब धान।
बैला बेचि के सहुआ के दिहली, रतिया कइली बिहान।
लइका लइकी के लँगटे देखनी, मेहरी के लुगरी पुरान।
सहुआ रजवा चैन से सौवैं, हमारे ना हीं ठिकान।
कबहुँक लपसी लाटा खइनी, कबहुँक साँझ विहान।
फिकिरिया मरलसि जान, दुरदिनवा कइलसि हरान।

राजनीतिक जीवन का चित्रण

भोजपुरी लोकगीतों में राजनीतिक जीवन का चित्रण भी मिलता है। जहाँ शासकों के अत्याचार का वर्णन है वहीं पर कुछ ऐसे भी लोग थे शासन में जो जनता की आवाज सुनते थे उन्हें निर्भय होकर रहने को कहते थे। ऐसे लोगों को जनता भूल नहीं सकती–

कर जोरि हरिनि अरज करे, सुनि ना कौसिला रानी हो।
रानी! सीता के होइहें नंदलाल हमहिं कुछु देबहिंहो।
सोनवां मढ़इबो दूनों सिंधिया, भोजनवा तिल चाउर हो।
हरिनी! भुगतहु ओजोधा के राज, अभय बन विचरहु हो।

मुसलमानी काल के अत्याचार, उनका लालच आदि का वर्णन भी मिलता है। मुसलमान शासक हिन्दू स्त्रियों को बलात अपनी पत्नी बनाना चाहते थे। हिन्दू स्त्रियाँ अपने प्राण देकर अपने सतीत्व की रक्षा करती थीं। इस संबंध में कुसुमा देवी का नाम अमर हो गया उन्होंने मिर्जा से प्यास लगने का बहाना किया और तालाब में डूबकर अपने प्राण त्याग दिये। इस प्रकार उन्होंने अपने मायके तथा ससुराल दोनों की लाज रख ली मिर्जा रोते रह गये।

मुँहवा पटुका देके रोवे राजा मिरजा,
मोरे मुँह करिवा लगाइ हो ना।
सिर पै पगाड़िया बाँधे हँसै भैया बाबा,
दूनों कुल राखेउ कुसुमा हो ना।

वीरता और देखभक्ति भोजपुरी क्षेत्र की सांस्कृतिक विशेषता है। डॉ0 ग्रियर्सन ने लिखा है कि ''भोजपुरी उस शक्तिशाली, स्फुर्तिपूर्ण और उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा है, जो परिस्थिति और समय के अनुकूल अपने को बनाने के लिए सदा प्रस्तुत रहती है और जिसका प्रभाव हिन्दुस्तान के हर भाग पर पड़ा है। हिन्दुस्तान की सभ्यता फैलाने का श्रेय बंगालियों और भोजपुरियों को ही प्राप्त है। इस काम में बंगालियों ने अपनी कलम से काम लिए और भोजपुरियों ने अपनी लाठी से।'' प्रथम स्वतत्रंता संग्राम का आरम्भ हिन्दू–मुसलमान दोनों धर्मो से हुआ। भोजपुरी क्षेत्र का नेतृत्व वीर कुँवरसिंह ने किया। इसी से इस युद्ध को जनता ने कुँवर की लडइया कहा।

कप्तान लिखे मिलउ कुँवर सिहं
आरा के सूबा बनइब रे।
तोफा देबों, इनाम देबो।
तोहके राजा बनाइब रे।
बाबू कुँवर सिंह भेजले सनेसवा,
मोसे ना चली चतुराई रे।
जब तक प्रान रही तन भीतर,
मारग नाहीं बदलाई रे।

धार्मिक जीवन का चित्रण

राजनैतिक स्थितियों के साथ–साथ भोजपुरी लोकगीतों में उन धार्मिक कृत्यों का वर्णन मिलता है, जिन्हें हिन्दू समाज सदा से धर्म का अंग मानता रहा है। इन गीतों में जिन प्रधान देवताओं का उल्लेख मिलता है। उसमें भगवान शिव प्रमुख हैं। प्रत्येक गाँव में भगवान शिव का मंदिर अवश्य होता है।

सिव बइठल मंदिलवा में दान करेले।

x x x

सिवजी के चनन लागल केवाड़, कसइलिया केरा चउकठ।

शिवजी को भाँग धतूरा बहुत पंसद हैं इसलिए लोग इसे अपने घर में लगाते हैं। यदि यह कहीं नहीं मिलता है तो उसे ढूँ कर लाते हैं और शिवजी को चढ़ाते हैं। लोगों का मानना है कि इससे शिव प्रसन्न होकर मनबांछित फल देते हैं–

का दे के सिव के मनाई हो, सिव मानत नहीं।
पेड़ा, मिठाई सिव के मनहीं न भावे,
भाँग–धतूरा कहाँ पाई हो, सिव मानत नाहीं।

इसके अतिरिक्त गणेशजी, सूर्य देव, ब्रहमा, विष्णु, तथा देवी की पूजा का विधान है। स्त्रियों का आस्था देवी माँ के प्रति बहुत रहती है। धर में कोई बीमार हो या अपशकुन हो तो स्त्रियाँ, देवी, काली दुर्गा माता, शीतला माता, की मनौती मानती हैं। चेचेक होने पर शीतला माता के गीत गाए जाते हैं। माता सबको सुंदर शरीर, अंधे को आँख, बंध्या को पुत्र देकर भक्तों की रक्षा करती हैं–

अंहरा के आँखि देइ, कोढ़िया के काया ए मइया।
बाझिनि के पूत देहु ए मइया, जस लेहुँ, जर लेहुँ।
भगतिया ए मइया।

प्रकृति से सामीप्य

प्रकृति ने भोजपुरी क्षेत्र की संस्कृति को प्रभावित किया है। भोजपुरी लोकगीतों में नदियों, नाले, पेड़, पहाड़ तालाब, गड़ही, त्रिवेणी, वन वृंदावन, नंदवन, मधुन, पेड़ पौधे लतायें, बाग–बगीचे, तिनका, फूल, फुलवारी, आदि सभी का किसी न किसी रूप में वर्णन मिलता है। ग्रामीण जनता प्रकृति के ज्यादा निकट रहती है। उनका प्रत्येक क्रिया कलाप प्रकृति पर निर्भर होता है। वह सूर्य देवता के अनुसार ही अपने दिन का आरम्भ करते हैं। ग्रामीण जनता नदियों को 'माँ' मानती है और उनको 'माँ' का आदर भी देती है। स्त्रियों को तो गंगा माँ की कृपा पर

प्रगाढ़ विश्वास है। जब वे अपनी स्थिति से दुखी हो जाती है। तो माँ गंगा से अपना दुख रोती हैं–

गंगा मइया के ऊँच अररवा, चढ़त डर लागेला हो,
ताहि चढ़ि कोसिला नहाली, मुकुति बनावेली हो।
हंसि के बोलेली गंगा जी, सुन कोसिला रानी हो।
कोसिला कवन संकट तहरा परले, मुकुति बनावेलु हो।
सोनवा ए गंगा मइया ढेर वांटे, रूपवा के के पूछेला हो।
मोरा से सनतनिया के साध, सनतनि हम चाहिले हो।

माँ गंगा प्रकट होकर उन्हें धीरज बंधाती है कि तुम न डूबो तुम्हें जरूर संतान पैदा होगी से नवें महीने–

'तेवई, आजु से नवएँ महिनवा होरिलु तोरे होइहैं हो।

सौन्दर्यानुभूति मनुष्य को प्रकृति से ही मिलती है। मनुष्य अपनी अनुकरण प्रवृत्ति के कारण ही स्वतः निर्माण करता है। प्रकृति का सौदर्य सदा से ही मानव मन को आनंदित करता रहा है। मनुष्य ने अपनी भावनाओं को अपनी कला के माध्यम से प्रकट किया है। भोजपुरी लोकगीतों में वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, गायन, वादन नृत्य एवं नाट्य कला आदि सभी प्रकार की कलाओं का वर्णन पाया जाता है। विभिन्न अवसरों पर अपनी इन्हीं कलाओं का प्रदर्शन करके लोग अपना मनोरंजन करते हैं। एक लोकगीत में उल्लेख है कि दूल्हा कोहबर की चित्रकारी देखकर मुग्ध हो जाता है और दुल्हन से उसके बारे में पूछता है। दुल्हन बताती है कि मेरी भाभी गुणों की खान हैं उन्होंने ही यह चित्र बनाया है–

विअहन अइले लखपति के राजा,
कोहबर देखि लुभाई,
कलसा के आते–आते बोलेले कवन दुल्हा,
के अइसन कोहबर उरेहल।
जेठकी भउजइया प्रभु सर्वेगुन आगरि,
उहे अइसन कोहबर उरेहल।
दान दहेज सासु कुछउ नालेबो,
जेठ की सरहजिया देहेज लेइबि।

निष्कर्ष

हमारा देश बहुत विशाल है, यहाँ सारी जातियाँ निवास करती हैं। सभी जातियों का अपना रहन–सहन और प्रथाएँ हैं। जिन का वर्णन लोक साहित्य में मिलता है। जिसमें से लोकगीत प्रमुख है। इसलिए मानव समाज के लिए ये लोकगीत अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण हैं जो कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को अपने में समेटे हुए है। डॉ0 कृष्ण देव उपाध्याय के शब्दो में ''लोक–साहित्य जनता जर्नादन की सम्पति है। यह भगवान के विराट स्वरूप में भाँति विराट और अनंत है। संसार के सभी सभ्य देशों में लोक–साहित्य के संकलन, सम्पादन और प्रकाशन के लिए अनेक संस्थाओ की स्थापना की गई है। स्वतंत्र भारत में लोक साहित्य की समुन्नति और संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। अतः आशा ही नही दृढ़ विश्वास है कि हमारे देश के नवयुवक इसके सम्यक संकलन और सम्पादन में जुट जायेंगे तथा काल के गाल में जाती हुई लोकसंस्कृति तथा लोक साहित्य की रक्षा का प्रयास प्राणपण से करेंगे। लोक साहित्य की रक्षा करना हमारा कर्तव्य ही नहीं प्रत्युत राष्ट्रीय धर्म भी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भोजपुरी लोकसाहित्य, कृष्णदेव उपाध्याय, द्वितीय संस्करण, 2008ई0 विश्वविद्यालय प्रकाशन*
2. *लोक साहित्य और संस्कृति, डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद, 2016, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद*
3. *लोक साहित्य की भूमिका, डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय, 2016, साहित्यभवन (प्रा0) लिमिटेड*
4. *भोजपुरी लोकसाहित्यः सांस्कृतिक अध्ययन, श्रीधर मिश्र, सन्, 1971, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद।*
5. *सम्मेलन पत्रिका लोकसंस्कृति अंकण् पृ० २५०ण्*
6. *भारतीय संस्कृति में लोक जीवन की अभिव्यक्तिए महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराजए एमण्एण्ए सम्मेलन पत्रिकाए लोक संस्कृति अंकए पृष्ठ.२४ण् हिन्दी साहित्य सम्मेलनए प्रयागण् १६७३ण्*
7. *मिश्र, विद्यानिवास ;2003). वाचिक कविता–भोजपुरीण् नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठण् ISBN 81-263-0954-7.k~ पहुँच तिथी 15 अप्रैल 2016.*